PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 4, ISSUE 4

नारी के स्वाभिमान, संघर्ष एवं ममता की कहानी : 'रानी माँ का चबूतरा'

डॉ. भरत ए.पटेल
हिन्दी विभाग
विजयनगर आर्ट्स कॉलेज,
विजयनगर, जि.साबरकांठा
गुजरात भारत

मन्नू भण्डारी समकालीन हिन्दी साहित्य की सशक्त महिला कथाकार हैं | उन्हों ने अपनी कहानियों में बृहत्तर सामाजिक आयाम को अपनाकर व्यापक जीवन-दृष्टि का परिचय दिया है | बदलते मूल्यों, टूटते सम्बन्धों, एकाकीपन, कुंठा, तनाव, अंत:संघर्ष से ग्रस्त मनुष्य की मानसिकता और संवेदना को मन्नूजी ने मार्मिक अभिव्यक्ति दी है | उनकी कहानियों में निरूपित व्यक्तिगत समस्याएँ कहीं न कहीं सामाजिक संदर्भों से जुड़ती हैं |

'रानी माँ का चबूतरा' एक ऐसी सशक्त कहानी है, जिसमें एक गरीब स्त्री के स्वाभिमान, जीवन-संघर्ष और माँ की ममता को गहरी संवेदना के साथ अभिव्यक्त किया गया है | बस्ती की सारी स्त्रियाँ पूर्णिमा की रात को रानी माँ के चबूतरे पर दीया जलाने जाती हैं | रानी माँ नगरसेठ की पत्नी थी, जिसने अपने बच्चे को शीतला माँ के प्रकोप से बचाने के लिए एक साधू के कहने पर सात दिन तक अन्न-जल का त्याग कर दिया था | खुद मर गई, पर बच्चे को ज़िंदगी दे गई | नगरसेठ ने अपने बगीचे में रानी माँ की याद में चबूतरा बनवाया था | बस्ती की सारी औरतें सजधज के पूर्णिमा की रात को रानी माँ के चबूतरे पर दीया जलाने जाती हैं | एक नहीं जाती है तो गुलाबी | उसका पति एक नंबर का शराबी था | गुलाबी मजदूरी करके पैसे लाती और वह दारू पी जाता | एक दिन गुलाबी को इतना गुस्सा आया कि उसे पीटकर घर से निकाल दिया | तब से नौ साल की लड़की मेवा और छोटे बेटे को खुद मजदूरी करके पालती है | सुबह से शाम तक अपने बेटे-बेटी को

कोठरी में बंद करके काम पर जाती है | दोनों देर तक रोते-बिसूरते रहते | बस्ती वाले उसे चुड़ैल और कसाइन कहते हैं | पीठ पीछे निंदा भी खूब करते हैं | पता चलने पर गुलाबी की कर्कश जीभ सबका पानी उतार देती है | ठेकेदार से माँगकर लाए सीमेंट और चूना से जब वह आधी रात को घर की छत का समारकाम करती है, तब खटर-पटर की आवाज सुनकर गोपाल कहता है - " ' आधी रात को क्या कर रही है गुलाबी ? ' तब वह उत्तर देती है -' तेरी कबर खोद रही हूँ | जाने कैसे लोग है इस बस्ती के कि गुलाबी के काम में टांग अड़ाए बिना इन ससुरों की रोटी हजम नहीं होती |" [१] गुलाबी पूरा दिन काम कर रात को घर आती है | बच्चों को खिलाकर उन्हें कोठरी में बंद करके फिर कहीं बाहर जाती है | तब पड़ोसिन रामी उससे पूछती है | वह गुर्राकर कहती है -"जा रही हूँ अपने खसम से याराना करने | तू भी चलेगी क्या ?" [२] बस्ती के लोगों की मानसिकता ऐसी है कि गुलाबी की हर हरकत का ध्यान रखते हैं और प्रश्न पूछते है, सलाह देते रहते हैं | हो सकता है यही कारण हो गुलाबी के कर्कशा हो जाने का |

गुलाबी बड़ी खुद्दार औरत है | बस्ती के बुजुर्ग काका-काकी के संवाद में इसकी खुद्दारी का परिचय मिलता है | काकी कहती है - "मुसीबत की मारी है तो सारी बस्ती मदद करने को तैयार है ; पर वह तो हेकड़ीवाली ऐसी कि अपना ठेंगा ऊपर रखेगी |" [३] गुलाबी किसी की मदद या उपकार के बोझ तले दबना नहीं चाहती | उसकी नौ साल की बेटी मेवा काँच की हरी चुड़ियाँ पहनकर आती है, तब वह समझती है कि उसने चोरी करके चुड़ियाँ पहनी है | अत: उसे पीटती है | कोई उसकी बेटी को चोरनी कहे वह उसे बर्दाश्त नहीं होगा | कोई कहता है कि यह तो उसे रामेसुर ने दी है | नाहक मार दिया बच्ची को | तब वह कहती है - "दी है, तो क्यों दी है ? हम क्या भिखमंगे हैं जो किसी का दिया पहनेंगे ? आज मेरे घर में कोई मुंछोंवाला नहीं बैठा है तो सब लोग भीख देने चले हैं | थू है उन पर ! बड़े आए हैं दया दिखानेवाले !" [४] गुलाबी किसी की दया पर जीनेवाली औरत नहीं है | शराबी और निकम्मे पति के चले जाने के बाद भी वह कड़ी मेहनत करके बच्चों का पेट पालती है |

गुलाबी अत्यंत स्वाभिमानी औरत है | बस्ती में शिशु-सुरक्षा केन्द्र खुलता है | बस्ती के बूढ़े चाचा उसे सलाह देते हुए कहते हैं - "अरे गुलाबी, देख तेरे छोरे के लिए सरकार ने केन्द्र खोल दिया है | वहाँ नाम लिखा दे अपने बच्चे का |' 'सरकार मेरी खसम है न, जो

केन्द्र खोल देगी मेरे लिए | ये सब तो पैसेवालों के चोंचले हैं | मेरा कौन मरद कमानेवाला बैठा है जो पाँच रुपये महीने दे दीया करेगा !'

'बस्तीवाले चंदा कर देंगे री | तू जाकर नाम लिखा आ |'

'किसी के दान-पुन्न पर पलनेवाली नहीं है गुलाबी, थूकती है तुम्हारे चन्दे पर |" [५]

बस्ती में जिसे चुड़ैल और कसाइन कहा जाता था, ऐसी यह कर्कशा नारी नारियल के समान ऊपर से सख्त और कडक, लेकिन भीतर से उतनी कोमल भी है | उसके भीतर भी माँ की अपार ममता है | अपने बच्चों के मरने पर प्रसाद चढ़ाने की बात कहनेवाली और इन्हें कीड़े-मकोड़े कहनेवाली यह माँ खुद भूखी रहकर भी बच्चों को खिलाती है -

"मेवा ने पूछा : तू क्या खाएगी ?

'मुझे भूख नहीं है, चुपचाप खा ले |'

' कल भी तो तूने कुछ नहीं खाया था माँ ? '

'कह रही हूँ, खा ले चुपचाप, सो नहीं होता | जीभ लड़ाए जा रही बैठी-बैठी | ' ' तू तो आजकल जरा सी ही सत्तू लाती है माँ | अपने लिए नहीं लाती ? ' गुलाबी ने आँसूभरी आँखों से मेवा की ओर देखा और खींचकर उसे अपनी छाती से चिपका लिया |" [६] यहाँ बेटी के प्रश्नों से माँ के सख्त हृदय के नीचे बहनेवाले ममता के झरने का परिचय मिलता है |यह दृश्य बड़ा ही हृदयद्रावक है |

गुलाबी मकान बनानेवाले ठेकेदार के यहाँ मजदूरी करती थी | लेकिन कुछ दिनों से वह रात को भी बच्चों को बंद करके कुछ समय के लिए कहीं चली जाती है | उसकी पड़ोसन रामी यह समाचार स्त्री-मंडली को देती है | सब उसके बदचलन होने की चर्चा करते रहते हैं | उसी समय दो आदमी गुलाबी के अचेत शरीर को उठाकर ले आते हैं | काका-काकी और रामी उसे कोठरी में ले जाकर मुँह पर पानी छिड़कते हैं | चाचा उसके कपड़े ढीले करने का आदेश करते हैं | उस समय अँगिया से कागज की पुड़िया गिरती है | चाचा देखते है तो इसमें काँच की छोटी-छोटी हरी चुड़ियाँ थी और शिशु-सुरक्षा केन्द्र की पाँच रुपए की रसीद थी | इसके

लिए ही गुलाबी ने दो-तीन दिन भूखा रहकर तथा शाम को दूसरों का चौका-बर्तन करके पैसे जोड़े थे | सचमुच रानी माँ से भी बढ़कर ममता है गुलाबी में, जो उसने साबित कर दिया |

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि 'रानी माँ का चबूतरा' एक ऐसी ऊर्जावान कहानी है, जिसमें मजदूरी करनेवाली औरत के स्वाभिमान, जीवन-संघर्ष और गहरी ममता को संवेदनापूर्ण और मार्मिक अभिव्यक्ति मिली है | गुलाबी का चरित्र मानसपट पर अमिट छाप छोड़ जाता है |

संदर्भ संकेत :

१. ' रानी माँ का चबूतरा ' पृष्ठ - २१६ सम्पूर्ण कहानियाँ : मन्नू भण्डारी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली |
२. वही, पृष्ठ- २१७
३. वही, पृष्ठ- २१२
४. वही, पृष्ठ- २१५
५. वही, पृष्ठ- २१६
६. वही, पृष्ठ- २१८